यश मालवीय

देखना है बस तुम्ही को

सिर्फ दिन भर चाय पानी
आज कुछ करना नहीं है
वक्त से डरना नहीं है

एक छुट्टी है कि छुट्टी के
बहुत से फायदे हैं
है उन्हें बेकायदा करना
कि जो भी कायदे हैं

कागजों से फाइलों का
पेट भी भरना नहीं है

फोन को स्विच ऑफ करके
बात करना है तुम्हीं से
अनगिनत हैं रूप छवियां
और हैं हैरान शीशे

आज घर से कहीं बाहर
पांव भी धरना नहीं है

देखना है बस तुम्हीं को
जानना भी है तुम्हीं को
क्या अजब है, जिस तरफ भी
न्जर आए, तुम्हीं दीखो

आज का दिन जिंदगी सा,
रोज का मरना नहीं है।

प्यार चटख रंगों में

चिड़िया के पंखों में
आसमान गाता है
आसमान वो, जिसका
धरती से नाता है

गाते हैं नदी पेड़
हवा गुनगुनाती है
कानों में गीत नया
अनसुना सुनाती है

प्यार चटख रंगों में
घिरता गहराता है

हरियाली हाथ उठा
पास बुला लेती है
पल भर में सारे
दुख दर्द सुला देती है

प्राणों में एक वही
जागता पिराता है

बेमौसम ही बादल
भीगते भिगोते हैं
पत्तों पर फिसल फिसल
फूल को संजोते हैं

पथ भूले को पथ ही
रास्ता दिखता है।

सम्पर्क–
'रामेश्वरम', ए–111
मेंहदौरी कॉलोनी
इलाहाबाद (उ.प्र.)–211004
मो.–09839792402